शिक्षा का इश्कनामा....



बिहार के शिक्षक इन दिनों नित नए आयाम स्थापित कर रहे हैं. शिक्षा के क्षेत्र में उनके अभिनव प्रयोगों की चर्चा अब विद्यालय की चारदीवारी से निकलकर सोशल मीडिया के अंतरराष्ट्रीय गलियारों तक पहुंच रही है. कभी बिहार के सरकारी विद्यालयों की चर्चा भवनहीनता, शिक्षकों की कमी, बच्चों की घटती उपस्थिति और बदहाल शैक्षणिक व्यवस्था को लेकर होती थी।

अब चर्चा के विषय बदल रहे हैं. कहीं गुरुजी की निद्रा साधना सुर्खियों में है, कहीं विद्यालय में भोज का आयोजन चर्चा बटोर रहा है, कहीं गुरुजी पर्यटन के नए प्रतिमान गढ़ रहे हैं तो कहीं प्रेम की ऐसी व्यावहारिक कथाएं संचालित हो रही हैं, जिनका उल्लेख न तो एनसीईआरटी की किताबों में है और न ही बिहार शिक्षा परियोजना के किसी प्रशिक्षण मॉड्यूल में. ताजा मामला जहानाबाद जिले के मखदुमपुर प्रखंड स्थित राजकीय मध्य विद्यालय माछिरा का है. यहां के एक शिक्षक और शिक्षिका का कथित आपत्तिजनक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ. बताया गया कि विद्यालय संचालन के समय दोनों विद्यालय की सीढ़ियों के पास ऐसी आत्मीयता प्रदर्शित कर रहे थे, जिसे देखकर शिक्षा विभाग के अनुशासन संबंधी दिशा-निर्देश भी शायद शर्मा जाएं. वीडियो सामने आने के बाद विभाग हरकत में आया. दोनों शिक्षकों को निलंबित कर जांच की प्रक्रिया शुरू कर दी गई. वीडियो की स्वतंत्र पुष्टि मीडिया ने नहीं की है, लेकिन घटना ने एक बार फिर सरकारी विद्यालयों की कार्यसंस्कृति पर सवाल खड़े कर दिए हैं.

अब इसे बिहार की शिक्षा व्यवस्था का नया शोध कहें या शिक्षकीय प्रतिभा का अप्रत्याशित विकास, यह समझना कठिन है. आखिर विद्यालय में जब बच्चे वर्णमाला सीख रहे हों, गणित के पहाड़े याद कर रहे हों और विज्ञान के प्रयोग समझ रहे हों, उस समय गुरुजी और मैडम किस विषय का व्यावहारिक प्रशिक्षण ले रहे थे? क्या शिक्षा विभाग ने प्रेमशास्त्र को भी किसी गुप्त पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया है? यदि ऐसा है तो कम से कम उसकी जानकारी अभिभावकों को भी होनी चाहिए, ताकि वे अपने बच्चों को उसी हिसाब से विद्यालय भेज सकें.

वैसे बिहार के विद्यालयों में प्रतिभाओं का विकास केवल जहानाबाद तक सीमित नहीं है. गोपालगंज जिले में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वृंदावन मौजे से जुड़ा एक मामला सामने आया, जहां एक शिक्षक छह छात्राओं को बिना विभागीय अनुमति राजगीर घुमाने ले गए. इस मामले में शिक्षक और प्रधानाध्यापक के विरुद्ध कार्रवाई हुई. ग्रामीणों के विरोध और हंगामे के बाद मामला काफी चर्चा में आया. अब इसे शैक्षणिक भ्रमण कहा जाए, पर्यटन का नया प्रयोग कहा जाए या विभागीय अनुमति की औपचारिकता को अनावश्यक समझने की प्रवृत्ति, यह जांच का विषय है. लेकिन गुरुजी ने बच्चों को यह जरूर समझा दिया कि राजगीर का इतिहास किताब में पढ़ने से बेहतर कभी-कभी वहां पहुंचकर भी समझा जा सकता है. बशर्ते भ्रमण की अनुमति और बच्चों की सुरक्षा का ध्यान रखा जाए.

बक्सर जिले के डुमरांव प्रखंड स्थित मध्य विद्यालय नथुनी अहीर के डेरा से जुड़ा मामला तो इससे भी गंभीर है. यहां दो शिक्षकों पर छात्राओं के साथ छेड़छाड़, आपत्तिजनक वीडियो और धमकी जैसे गंभीर आरोप सामने आए. मामला पुलिस और शिक्षा विभाग तक पहुंचा. शिक्षकों के निलंबन और प्रधानाध्यापक की गिरफ्तारी की खबरों ने गुरु-शिष्य संबंध की गरिमा पर गंभीर प्रश्न खड़े किए. यहां व्यंग्य करने से अधिक चिंता करने की जरूरत है, क्योंकि जिस उम्र में बच्चियों को विद्यालय में सुरक्षित वातावरण मिलना चाहिए, उस उम्र में यदि वे अपने ही शिक्षकों से भयभीत हों तो शिक्षा व्यवस्था के लिए इससे बड़ी विडंबना क्या होगी?

मधुबनी में भी सरकारी सेवा की मर्यादा से जुड़े मामले सामने आए. तीन शिक्षकों के विरुद्ध अलग-अलग आरोपों में कार्रवाई की खबर आई. किसी पर गोपनीय सामग्री सोशल मीडिया पर साझा करने, किसी पर महिला शिक्षिकाओं के साथ अमर्यादित व्यवहार तो किसी के कक्षा में सोते हुए वीडियो का मामला सामने आया. लगता है कि कुछ लोगों ने विद्यालय को कार्यस्थल कम और निजी सुविधाओं का विश्रामगृह अधिक समझ लिया है.

सुपौल में एक शिक्षक की कक्षा में सोते हुए तस्वीर या वीडियो वायरल होने पर निलंबन की कार्रवाई हुई. गुरुजी कुर्सी पर पैर रखकर ऐसी गहरी निद्रा में लीन थे, मानो शिक्षा विभाग ने उन्हें बच्चों को पढ़ाने के बजाय निद्रा विज्ञान में शोध करने की जिम्मेदारी सौंप रखी हो. संभव है कि वे यह प्रयोग कर रहे हों कि शिक्षक के सो जाने पर विद्यार्थी कितनी देर तक स्वतः अनुशासित रह सकते हैं. हालांकि इस शोध का परिणाम बच्चों के भविष्य के लिए कितना उपयोगी होगा, इसका आकलन अभी बाकी है.

इधर जहानाबाद के नेहालपुर स्थित एक विद्यालय में शिक्षकों की मतन पार्टी का वीडियो भी मई 2026 में चर्चा में आया था. कक्षा में पढ़ाई के बजाय भोजन की व्यवस्था देखकर ऐसा लगा मानो विद्यालय में मध्याह्न भोजन योजना का कोई नया संस्करण शुरू हो गया हो. अंतर बस इतना था कि बच्चों के लिए निर्धारित भोजन और शिक्षकों की दावत के बीच दीवार खड़ी थी. आखिर विद्यालय में स्वाद और शिक्षा का ऐसा समन्वय शायद ही किसी पाठ्यक्रम में पढ़ाया गया हो.

इन घटनाओं को एक साथ रखकर देखें तो बिहार के सरकारी विद्यालयों में गतिविधियों की विविधता दिखाई देती है. कोई गुरुजी विश्राम की नई विधा विकसित कर रहे हैं, कोई पर्यटन को बढ़ावा दे रहे हैं, कोई पाककला में रुचि दिखा रहे हैं तो कोई विद्यालय की सीढ़ियों को भावनाओं के आदान-प्रदान का उपयुक्त स्थल समझ बैठते हैं. शिक्षा विभाग के लिए यह शोध का विषय हो सकता है कि आखिर विद्यालयों में पढ़ाई के अतिरिक्त इतनी सारी गतिविधियों के लिए समय कहां से निकल आता है?

सरकार की ओर से शिक्षकों की उपस्थिति सुनिश्चित करने के लिए कभी ई-शिक्षा कोष, कभी ऑनलाइन हाजिरी तो कभी निरीक्षण की नई व्यवस्था लागू की जाती है. शिक्षकों को समय पर विद्यालय पहुंचने, बच्चों को पढ़ाने, पाठ्यक्रम पूरा करने और शैक्षणिक गुणवत्ता सुधारने के निर्देश दिए जाते हैं. मोबाइल से उपस्थिति दर्ज कराने की व्यवस्था ने शिक्षकों की दिनचर्या को तकनीक से जोड़ दिया है. लेकिन तकनीक की भी अपनी सीमाएं हैं. मोबाइल यह तो बता सकता है कि शिक्षक विद्यालय पहुंचे या नहीं, लेकिन यह कैसे बताएगा कि विद्यालय पहुंचकर उन्होंने किया क्या? उपस्थिति और उपयोगिता के बीच का अंतर शायद अभी किसी सॉफ्टवेयर में दर्ज नहीं हुआ है.

बिहार में लाखों शिक्षक ऐसे हैं, जो कठिन परिस्थितियों में भी पूरी निष्ठा से बच्चों का भविष्य गढ़ रहे हैं. कहीं भवन की कमी है, कहीं पर्याप्त किताएं नहीं हैं, कहीं बच्चों के बैठने की व्यवस्था ठीक नहीं है तो कहीं शिक्षक अपनी जिम्मेदारियों के साथ गैर-शैक्षणिक कार्यों का बोझ भी उठाते हैं. ऐसे शिक्षकों के योगदान को किसी भी परिस्थिति में नजरअंदाज नहीं किया जा सकता. लेकिन कुछ लोगों की गैरजिम्मेदाराना हरकतें पूरे शिक्षक समुदाय की प्रतिष्ठा पर दाग लगा देती हैं. एक ईमानदार शिक्षक को भी तब असहज होना पड़ता है, जब समाज उसे उसी नजर से देखने लगता है, जिस नजर से वह वायरल वीडियो में दिख रहे व्यक्ति को देखता है.

यहां एक बात समझने की जरूरत है कि शिक्षक भी मनुष्य हैं. उन्हें भी प्रेम करने, मित्रता रखने, पारिवारिक जीवन जीने और निजी संबंध बनाने का पूरा अधिकार है. किसी के निजी जीवन में ताकझांक करना न तो सभ्य समाज का लक्षण है और न ही किसी की गरिमा का सम्मान. लेकिन सरकारी विद्यालय का कार्यस्थल निजी समय नहीं होता. विद्यालय परिसर में शिक्षक की पहली पहचान उसकी जिम्मेदारी होती है. प्रेम करना अपराध नहीं, लेकिन अपने दायित्व की कीमत पर संस्थागत मर्यादा की अनदेखी करना सवालों के घेरे में जरूर आता है. विद्यालय बच्चों का भविष्य बनाने की जगह है, किसी की निजी भावनाओं का सार्वजनिक मंच नहीं.

विडंबना देखिए कि बिहार के गांवों में आज भी ऐसे अभिभावक हैं, जो अपनी मजदूरी का पैसा बचाकर बच्चों को पढ़ने भेजते हैं. कोई खेत में पसीना बहाता है, कोई दूसरे प्रदेश में मजदूरी करता है, कोई रिक्शा चलाता है, कोई छोटी दुकान चलाकर बच्चों की फीस और जरूरतें पूरी करता है. उसे उम्मीद होती है कि उसका बच्चा विद्यालय जाकर कुछ सीखेगा, आगे बढ़ेगा और परिवार की जिंदगी बदलेगा. वह अपने बच्चे को गुरुजी के भरोसे छोड़ता है. लेकिन जब वही गुरुजी सोशल मीडिया पर अपनी अलग-अलग प्रतिभाओं का प्रदर्शन करते नजर आते हैं तो अभिभावक के भरोसे की जमीन भी हिलती है.

किसी बच्चे से पूछिए कि बड़ा होकर क्या बनना चाहते हो? कोई डॉक्टर कहेगा, कोई इंजीनियर, कोई अधिकारी तो कोई शिक्षक. शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाला बच्चा अपने गुरु को आदर्श मानता है. वह उनके बोलने के ढंग, पहनावे, व्यवहार और आचरण से सीखता है. वह केवल किताब का पाठ नहीं पढ़ता, बल्कि शिक्षक के व्यक्तित्व को भी अपनी स्मृति में उतारता है. ऐसे में जब गुरुजी का आदर्श मोबाइल की स्क्रीन पर किसी दूसरी ही भूमिका में दिखाई देता है तो बच्चे के मन में शिक्षा की परिभाषा को लेकर भ्रम पैदा होना स्वाभाविक है.

शायद बिहार के शिक्षा विभाग को अब एक नया प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरू करना चाहिए, इसमें शिक्षकों को बताया जाए कि विद्यालय और निजी जीवन के बीच अंतर क्या है, बच्चों के सामने शिक्षक का व्यवहार कैसा होना चाहिए और सरकारी सेवा की मर्यादा किसे कहते हैं. प्रशिक्षण में एक विशेष अध्याय यह भी हो कि मोबाइल कैमरा केवल सेल्फी लेने के लिए नहीं बना है, बल्कि कभी-कभी वही आपकी जवाबदेही का दस्तावेज भी बन जाता है. हालांकि यह प्रशिक्षण उन शिक्षकों के लिए अधिक उपयोगी होगा, जो अपनी जिम्मेदारी से अधिक अपनी लोकप्रियता के प्रति गंभीर हैं.

शिक्षा विभाग को भी केवल वीडियो वायरल होने के बाद निलंबन की कार्रवाई करके अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं माननी चाहिए. सवाल यह है कि विद्यालयों का नियमित निरीक्षण कौन करेगा? बच्चों की पढ़ाई की गुणवत्ता का मूल्यांकन कौन करेगा? शिक्षकों की वास्तविक उपस्थिति और कक्षा में उनकी सक्रियता का हिसाब कौन रखेगा? क्या शिक्षा विभाग का पूरा तंत्र तब तक सोता रहेगा, जब तक किसी ग्रामीण के मोबाइल से कोई वीडियो जागने का अलार्म नहीं बजा देता? यदि विभाग की निगरानी व्यवस्था मजबूत हो तो बहुत-सी घटनाएं सामने आने से पहले ही रोकी जा सकती हैं.

विडंबना यह भी है कि हमारे यहां शिक्षक दिवस पर शिक्षकों को सम्मानित करने की परंपरा है. मंचों से उन्हें राष्ट्रनिर्माता, समाज का मार्गदर्शक और भविष्य का शिल्पकार बताया जाता है. बच्चे उनके पैर छूते हैं, अभिभावक उनका सम्मान करते हैं और समाज उन्हें आदर्श मानता है. लेकिन सम्मान केवल समारोह में माला पहनाने से नहीं मिलता. सम्मान आचरण से अर्जित होता है. जिस पद के साथ समाज ने इतनी बड़ी जिम्मेदारी जोड़ रखी है, उस पद की गरिमा को बनाए रखना भी उतना ही जरूरी है.

कभी बिहार के विद्यालयों से यह खबर आती थी कि बच्चों ने राज्य स्तर पर प्रतियोगिता में सफलता हासिल की, किसी विद्यालय के शिक्षक ने सीमित संसाधनों में शानदार प्रयोग किया, किसी ग्रामीण शिक्षक ने अपने प्रयास से विद्यालय की तस्वीर बदल दी. ऐसी खबरें समाज में उम्मीद जगाती थीं. आज ऐसी सकारात्मक खबरों के बीच जब इस तरह के प्रसंग सुर्खियां बनते हैं तो लगता है कि शिक्षा व्यवस्था को केवल भवन, बेंच, किताब और उपस्थिति से नहीं, बल्कि चरित्र और जवाबदेही से भी मजबूत करने की आवश्यकता है.

बहरहाल, बिहार के विद्यालयों में नए-नए आयाम स्थापित करने का सिलसिला जारी है. शिक्षा विभाग को चाहिए कि इन नवाचारों का संकलन कर एक अलग रिपोर्ट तैयार करे. उसमें पढ़ाई, अनुशासन, बच्चों की सुरक्षा और शिक्षकों की जवाबदेही के साथ-साथ उन गतिविधियों का भी उल्लेख हो, जिनके कारण विद्यालय सोशल मीडिया पर चर्चा में आए. हो सकता है इस रिपोर्ट से भविष्य में किसी नए शोध का रास्ता खुले.

और अंत में एक दृश्य की कल्पना कीजिए. एक दिन विद्यालय में निरीक्षण के लिए अधिकारी पहुंचे. उन्होंने कक्षा में बैठे बच्चों से पूछा, बताओ, तुम्हारे गुरुजी तुम्हें क्या-क्या सिखाते हैं? एक बच्चे ने हाथ उठाया और कहा, सर, गुरुजी हमें गणित, हिंदी और विज्ञान तो पढ़ाते ही हैं, लेकिन इन दिनों हम लोगों ने कुछ नए विषय भी सीख लिए हैं. अधिकारी ने उत्सुकता से पूछा, कौन-कौन से विषय? बच्चा बोला, सर, एक गुरुजी से सोने की कला सीख रहे हैं, दूसरे से पर्यटन का ज्ञान और तीसरे से मोबाइल पर वायरल होने की तकनीक. अधिकारी ने चौंककर पूछा, और पढ़ाई? बच्चा कुछ देर चुप रहा. फिर बड़ी मासूमियत से बोला, सर, पढ़ाई तो किताबों में है, लेकिन विद्यालय में जो दिखता है, वही तो हम सीखते हैं.

अधिकारी के पास उस बच्चे के सवाल का कोई उत्तर नहीं था. उन्होंने अपनी डायरी बंद की और विद्यालय से बाहर निकल गए. पीछे से बच्चे की आवाज फिर आई-सर, जाते-जाते एक बात बताते जाइएगा. हमें बड़ा होकर शिक्षक बनना है या वायरल होना है?

शायद यही वह सवाल है, जिसका जवाब बिहार की पूरी शिक्षा व्यवस्था को तलाशना चाहिए. क्योंकि जिस दिन विद्यालयों में शिक्षक अपने आचरण से पढ़ाने लगेंगे, उस दिन बच्चों को आदर्श की परिभाषा गूगल पर नहीं खोजनी पड़ेगी. वरना आने वाली पीढ़ियां इतिहास में यह जरूर दर्ज करेंगी कि एक समय बिहार के विद्यालयों में शिक्षा के अनेक प्रयोग हुए, लेकिन सबसे बड़ा प्रयोग यह था कि बच्चों को पढ़ने वाले कुछ लोग खुद ही अपनी जिम्मेदारी का पाठ भूल गए थे.

कुमार धनंजय सुमन
सोनवर्षा ,थाना-बिहपुर,
भागलपुर, बिहार 853201

हमर लोक-जीवन म परसा रुखुआ अउ सोहाई

छत्तीसगढ़ के जन-जीवन हर कृषि संस्कृति अउ प्रकृति संस्कृति पर आधारित हे।तभे तो इहाँ के जम्मो सुख-दुख तीज-तिहार,नेंग-बड़ाई,धर्म- कर्म,पूजा-पाठ के काज म एकर प्रभाव हर दिख जाथे।जइसे कि मै उपर म बताय हँव कि हमर जीवन हर कृषि संस्कृति अउ प्रकृति संस्कृति पर आधारित हे।त आवव जानथन सबले पहिली कृषि संस्कृति ल-

हमर छत्तीसगढ़ राज के बात करे जाय त इहाँ शत- प्रतिशत कृषि कार्य अथवा खेती-किसानी-बखरी- बारी के काज होथे।इही हर इहाँ के जीवन आधार आय।

इहाँ के जन-जीवन हर इही कृषि के काज म निर्भर रहिथे।कृषि के जब बात करथन त एमा कोन-कोन फसल आथे जेला हमन कृषि के प्रमुख काज कहिथन।छत्तीसगढ़ के कृषि संस्कृति हर मुख्य रूप से धान पर आधारित हे जिहाँ ल इहाँ के किसान भाई मन पुरा-पूरा छह महीना तीन-तीन महीना के अंतराल म अर्थात खरीफ फसल अउ रबि फसल के रूप म लेथें।जेकर फसल हर धान ही होथे।जे हर हमर छत्तीसगढ़ीहा मन के लिए धन कहलाथे।इहीं धान के अतक ज्यादा पैदावार होथे कि जे कर कोई ठिकाना नई रहेतभे तो ए छत्तीसगढ़ ल धान के कटोरा कहे जाथे।एकर अलावा इहाँ मका,कोदो, कुटकी,अरहर,कुल्थी मूंगफली,सोयाबीन,दलहन, तिलहन अउ फल भी उगाए जाथे। संगे-संग बखरी म साग-भाजी भी उगाए जाथे।जे हर इहाँ के कृषि संस्कृति के विशेष पहिचान होथे।

छत्तीसगढ़ म बागवानी भी अब्बड़ करे जाथे जेमा फल फुल होथे जइसे कि रंग बिरंग फुल अउ फल म आम,जाम,जामुन,नीबू,आंवला, सीताफल,बोईर के सुग्घर फलदार पेड़ होथे।जेकर हरा-भरा बागवानी अउ मीठ-मीठ रसीला फल मन ह अपन कती आकर्षित करथे।

कृषि क्षेत्र का महत्व-छत्तीसगढ़ के लगभग आधा भूमि ले ज्यादा कृषि योग्य हावय अउ अधिकांश किसान मन छोटे अउ बड़े किसान हावय।इही कृषि काज हर हमर छत्तीसगढ के पहिचान आय।एकर बिना छत्तीसगढ़ के कोई अस्तित्व नईं।कावर कि इहि काजल हर रोजी-रोटी अउ जीवन के आधार आय।

छत्तीसगढ म रुखुवा मन के महत्व- हमर छत्तीसगढ़ म रुखुवा मन के भी अब्बड़ महत्व हावय।ए कर बिना लोक जीवन के कोनो काज हर पुरा नई होवय।चाहे सुख के काज हो चाहे दुख के काज हो।रुखुआ के आवश्यकता हो ही जाथे।

वईसे मानव जीवन के कोनो क्षेत्र न ले लिया जाय सबो क्षेत्र म एकर विशेष आवश्यकता होथे।

चाहे सामाजिक हो, चाहे धार्मिक हो, चाहे सांस्कृतिक हो,या फेर चाहे पारम्परिक हो।सबो क्षेत्र म ए रुखुआ मन के विशेष महत्व होथे।

जईसे कि-बर,पीपर,नीम,आमा,अमली,

डुमर,महुआ,परसा,जामुन आदि-आदि।

ए जम्मो रुखुआ मन के हमर लोक जीवन म अब्बड़ काजल होथे।जईसे कि पूजा-पाठ म बर पीपर आमा के लकरी, बर-बिहाव म महुआ,डुमर के डारा, सहित पारम्परिक जिनिस बनाय के रूप म,अउ फेर चूल्हा जलाय के रूप म।इही प्रकार से आथे परसा रुखुआ जेकर हमर छत्तीसगढ़ के लोक जीवन म अब्बड़ महत्व हे।

आवा जानथन एकर महत्व ल-

1.बारह मासी एकर पान से अंगाकर रोटी बनाय जाथे। ए कर पान से ही सुग्घर रोटी बनथे।

2. ए कर केंवर-केंवर डारा-पाना के सुग्घर झिंपारी बनथे जेला बनाके हमर गाँव देहात म परछी कुरिया,अंगना,मोहाटी ल तोपे अउ छाय जाथे।

जेकर से पानी के छिंचार ल रोके जाथे।

3. देवारी तिहार के बेरा म देवउठनी के दिन ए कर अब्बड़ महत्व हेाए कर बिना हमर पहटिया मन के नेंग बड़ाई अउ ओमन के विशेष कारज हर होथे।

इही परसा रुखुआ के जरी ल कोड़ के लाय जाथे,जेला ओमन बांक कढ़ियें। ए कर से ही ओमन के साल भर के देव उठनी तिहार अउ उरात नाचा हर पुरा हो पाथे। ए बांक से ही ए मन डोरी बनाथें।जब

ए हर बन जाथे तहां ले ओला सुग्घर रंग म रगे जाथे।

अउ फेर सुग्घर-सुग्घर गाय गरु मन के लिए माला अर्थात मंजूर पाँखी अउ रंग बिरंगी जुन्हा संग सोहई बनाथें।जेहर ओमन के रक्षा करथे।

ए सोहाई बांधे के परम्परा हर सदियों से चलत आत हे जेला यदुवंशी अर्थात राउत जाति के गाय चरईया मन करत आत हे।इही तिहार हर आंमन प्रमुख तिहार होथे।

देवउठनी के रथिया म ए राउत मन अपन देवता मन ल सुमरनी करथें -

सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गनेस हो।

पांच देव मिल रक्छा करंय,बरम्हा,बिसनु,महेस।। होहाहाहा।

अपन किसान घर बाजा-गाजा के साथ सुग्घर पारम्परिक वेष भूषा म जाथें जेकर गाय-गरु ल ओमन साल भर चरायें।

अउ सबले पहिली अपन किसान के अंगना म जाथें

अउ फेर दोहा पारत अपन किसान ल आय के आरो देथें।कुछ एक बेरा म सुग्घर दोहा पार-पार के नाचे के बाद ओ पाहटिया हर गाय-गरु मन ल सोहाई पहनाथें।फेर किसान के कोठी ढाबा म जाके अशीत देवत फेर दोहा बोलथें-

धन गोदानी भुईंया पावा, पावा हमर अससिस।

नाती-पूत ल घर भर जावे, जीवा लाख आशिषे।

अउ फेर गोबर के थाप देथें।इही हर असित होथे।

एकर बाद फेर किसान हर ओमन ल जसना बनथे ओसने रूपया-पईसा कपड़ा लत्ता भेंट करथे।

अरे जईसनहा मालिक लिए दिए रे भैया

अईसे के दे आशीष

अनधन तो घर भरे रे भैया

जुग जुग लाख बरीसे।।

आवत देवो राम रमईया,अउ जावत देवो आशीषे

दुधे खाईहै पुते फलौहै,जिहै लाख बरिसे।।

अउ फेर ए प्रकार से आशीत पाहटिया म अपन मालिक के घर ले बिदा हो जाथें।ए हर आय हमर छत्तीसगढ़ के लोक परम्परा अउ संस्कृति जिहां नाना प्रकार के सुग्घर झाँकी देखे ल मिल जाथे।

जिहां के परम्परा हर कृषि संस्कृति पर आधारित हे,ए कृषि संस्कृति म खेती-किसान,बखरी-बारी से लेकर खेत-खलिहान,बाग़-बगीचा अउ रुखराई मनके हरयाली के सुग्घर मनमोहक दृश्य दिखाई देथे। जेकर मन के हमर सामाजिक,धार्मिक अउ सांस्कृतिक जीवन म अब्बड़ महत्व होथे।जेकर लोक-संस्कृति म दया-मया प्रीत के,सद्भावना के,एकता के,भाईचारा के स्वरूप हर झलक जाथे।

अशोक पटेल आशु तुम्मा,शिवारीनारायण (छ ग)
9827874578

Shrinkflation के कारण उपभोक्ताओं की खरीद क्षमता पर असर

आर्थिक जगत में "Shrinkflation" एक महत्वपूर्ण और लगातार बढ़ती हुई प्रवृत्ति बन चुकी है, जो उपभोक्ताओं की जेब पर गहरा असर डालती है। Shrinkflation का अर्थ है किसी उत्पाद की कीमत को स्थिर रखते हुए उसके आकार, वजन या मात्रा में कमी करना। यह एक छिपा हुआ मूल्यवृद्धि का तरीका है, जिसे कई कंपनियाँ तब अपनाती हैं जब उत्पादन लागत बढ़ जाती है, लेकिन वे अपने उत्पाद की कीमत में सीधा इज़ाफ़ा नहीं करना चाहतीं।

इस प्रकार, उपभोक्ताओं को उनकी आदतों के अनुरूप समान मूल्य पर उत्पाद मिलता तो है, लेकिन उसकी मात्रा पहले की तुलना में कम होती है। धीरे-धीरे यह प्रवृत्ति न केवल उपभोक्ताओं की जेब पर अतिरिक्त दबाव डालती है, बल्कि उनकी क्रय शक्ति को भी प्रभावित करती है। Shrinkflation का सबसे बड़ा असर यह होता है कि उपभोक्ताओं को यह समझ नहीं आता कि वे कितनी अधिक कीमत चुका रहे हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी चॉकलेट बार का वजन पहले 100 ग्राम था और उसकी कीमत ? 50 थी, लेकिन बाद में उसका वजन घटाकर 90 ग्राम कर दिया गया, जबकि कीमत वही रही, तो तकनीकी रूप से कीमत में कोई बढ़ोतरी नहीं हुई, लेकिन प्रति ग्राम मूल्य बढ़ गया। उपभोक्ता अक्सर इसकी ओर ध्यान नहीं देते, क्योंकि वे कीमत को स्थिर पाकर संतुष्ट रहते हैं। यह मनोवैज्ञानिक प्रभाव कंपनियों के लिए फायदेमंद होता है, लेकिन उपभोक्ताओं को धीरे-धीरे कम उत्पाद मिलने लगता है, जिससे वे अनजाने में अधिक खर्च करने के लिए मजबूर हो जाते हैं। इस प्रवृत्ति का सबसे बड़ा प्रभाव उन उत्पादों पर पड़ता है, जिनका उपभोग रोजमर्रा की ज़िंदगी में होता है, जैसे कि स्नैक्स, डेयरी उत्पाद, साबुन, शैम्पू, पैकड फूड्स और अन्य आवश्यक वस्तुएँ। कंपनियाँ लागत बचाने के लिए इन उत्पादों की मात्रा कम कर देती हैं, लेकिन पैकेजिंग को इस तरह डिज़ाइन करती हैं कि उपभोक्ता को कोई स्पष्ट अंतर महसूस न हो। कई बार, कंपनियाँ वजन को 5-10त तक कम कर देती हैं, जिससे उपभोक्ता को इसका तुरंत पता नहीं चलता, लेकिन जब यह प्रवृत्ति लंबे समय तक जारी रहती है, तो उनके मासिक खर्चों में वृद्धि देखने को मिलती है।

Shrinkflation केवल मात्रा में कमी तक ही सीमित नहीं है, बल्कि उत्पाद की गुणवत्ता और संरचना में भी बदलाव लाने के लिए कंपनियाँ इसे अपनाती हैं। उदाहरण के लिए, किसी ब्रैंक ब्रांड की कीमत समान रहने के बावजूद उसमें उपयोग किए गए घटकों की गुणवत्ता गिर सकती है, जिससे उपभोक्ताओं को पहले जैसा स्वाद और पोषण नहीं मिल पाता। चॉकलेट में कोको की मात्रा कम करके अधिक चीनी मिलाना, साबुन को छोटे आकार में पेश करना या किसी पैकड फूड के मुख्य घटकों को बदलकर उसे सस्ता बनाना ड्ढ्ढ ये सभी Shrinkflation के उदाहरण हैं, जो उपभोक्ताओं के लिए एक नकारात्मक प्रभाव छोड़ते हैं। Shrinkflation का एक अन्य प्रभाव यह है कि यह उपभोक्ताओं के बजट को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। जब एक ही पैसे में पहले से कम मात्रा या गुणवत्ता मिलती है, तो लोगों को अधिक खरीदारी करनी पड़ती है। इससे उनकी कुल खर्च की गई राशि बढ़ जाती है, जिससे वे अपनी अन्य आवश्यकताओं के लिए कम पैसे बचा पाते हैं। मध्यमवर्गीय और निम्न आय वर्ग के लोगों पर इसका सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है, क्योंकि उनकी आमदनी सीमित होती है और वे महंगाई के प्रभाव को झेलने के लिए कम तैयार होते हैं। इसके अलावा, Shrinkflation उपभोक्ता विश्वास को भी नुकसान पहुँचाता है। जब उपभोक्ता यह महसूस करते हैं कि उन्हें धीरे-धीरे कम मात्रा मिल रही है, तो वे ब्रांड के प्रति असंतोष व्यक्त करने लगते हैं। वे नई कंपनियों या विकल्पों की तलाश में रहते हैं, जिससे ब्रांड लॉयल्टी कमजोर होती है। हालाँकि, बड़ी कंपनियाँ इस प्रभाव को धीमे और योजनाबद्ध तरीके से लागू करती हैं, ताकि उपभोक्ता को इसका तुरंत एहसास न हो, लेकिन जब यह एक सामान्य प्रवृत्ति बन जाती है, तो उपभोक्ता अधिक सचेत हो जाते हैं।

Shrinkflation का एक और नकारात्मक पहलू यह है कि यह उपभोक्ताओं के खर्च करने की प्रवृत्ति को प्रभावित करता है। जब किसी उपभोक्ता को यह अहसास होता है कि उनके नियमित उपयोग की वस्तुओं की मात्रा धीरे-धीरे कम हो रही है, तो वे अधिक मात्रा में खरीदारी करने की प्रवृत्ति अपनाने लगते हैं। उदाहरण के लिए, यदि किसी व्यक्ति को लगता है कि अगले महीने उनके पसंदीदा स्नैक का वजन और कम हो सकता है, तो वे पहले से अधिक मात्रा में खरीदारी करने की कोशिश कर सकते हैं, जिससे उनकी वर्तमान बचत पर प्रभाव पड़ता है। Shrinkflation के कारण बाजार में प्रतिस्पर्धा भी प्रभावित होती है। जब एक कंपनी अपने उत्पाद की मात्रा कम करती है, तो दूसरी कंपनियाँ भी इसी रणनीति का अनुसरण करने लगती हैं। धीरे-धीरे, यह पूरे उद्योग में एक सामान्य व्यापारिक प्रथा बन जाती है, जिससे उपभोक्ताओं के पास सीमित विकल्प बचते हैं। कई बार, स्थानीय और छोटे उत्पादक इस रणनीति का सामना नहीं कर पाते, जिससे वे बाजार से बाहर हो सकते हैं।

इस समस्या से बचने के लिए उपभोक्ताओं को अधिक जागरूक रहने की आवश्यकता है। जब भी वे किसी उत्पाद को खरीदें, तो उसकी मात्रा, घटक सूची और गुणवत्ता की तुलना पहले से करें। कई बार, कोई दूसरा ब्रांड समान कीमत पर अधिक मात्रा में उत्पाद प्रदान कर सकता है। इसके अलावा, सामूहिक रूप से इस विषय पर चर्चा करने और सोशल मीडिया पर इसके बारे में जागरूकता बढ़ाने से भी कंपनियों पर दबाव बनाया जा सकता है कि वे इस प्रवृत्ति को सीमित करें। Shrinkflation को पूरी तरह समाप्त करना मुश्किल है, क्योंकि यह कंपनियों की लागत बचाने की रणनीति का हिस्सा बन चुका है। लेकिन यदि उपभोक्ता अधिक जागरूक और सतर्क होंगे, तो वे अपने बजट को बेहतर तरीके से प्रबंधित कर सकते हैं और कंपनियों को अधिक पारदर्शिता अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं। सरकार और उपभोक्ता संरक्षण एजेंसियों को भी इस विषय पर ध्यान देना चाहिए, ताकि कंपनियाँ अनावश्यक रूप से उत्पादों की मात्रा कम न करें और उपभोक्ताओं को सही मूल्य मिले। अंततः, Shrinkflation एक ऐसी प्रक्रिया है, जो धीरे-धीरे उपभोक्ताओं की खरीद क्षमता को प्रभावित करती है। यह महंगाई का एक छिपा हुआ रूप है, जिसे समझना और इसके प्रति सचेत रहना बेहद आवश्यक है। यदि उपभोक्ता इस बारे में जागरूक हो जाते हैं और अपने खरीदारी के निर्णयों को समझदारी से लेते हैं, तो वे इस प्रवृत्ति के नकारात्मक प्रभावों को काफी हद तक कम कर सकते हैं।

--- **संजय अग्रवाला,**
जलपाईगुड़ी, पश्चिम बंगाल